पोवार(३६ कुल पंवार) समाज के सामाजिक सांस्कृतिक रीति-रिवाज

पोवार (३६ कुल पंवार) समाज के सामाजिक सांस्कृतिक रीति-रिवाज

शिशु जन्म

ग्रामीण अंचल में पोवार परिवारों में गांव की पेशावर दायी एवम् वयोवृद्ध महिलाओं की निगरानी में प्रसुति घर में ही कराई जाती थी। जहां सुविधायें उपलब्ध है, प्रसुतिगृह में जचकी कराई जाती हैं। शिशु जन्म के तुरंत बाद प्रसुति कक्ष, शिशु व माता की साफ सफाई व खेत से टेंभरून(तेंदु) की लकड़ी काट कर लाकर फाटक के सामने आड़ी रखी जाती हैं ताकि भूत-पिशाच आदि का गृह प्रवेश अवरुद्ध हो जाय।

आगामी पांच दिनोंतक परिवार जन अशुद्ध (सुतुक) स्थिति में रहते है, अतः आगन्तुक इस कालावधि में गृह प्रवेश कर अशुद्ध न होने का संकेत एवम् यह एक प्रकार से जीव-जंतु संक्रमण प्रतिकार की भी व्यवस्था मान सकते है। किसी व्यक्ति को जंगल भेज कर काकई पेड़ की साल या बारीक लकड़िया मंगाई जाती है। उन्हें कुटकर चूर्ण बनाया जाता है। अन्य व्यक्ति द्वारा कुम्हार के घर से नई कोरी मटकी (हांडी) बुलाई जाती है। उसमें तैयार किया हुआ काकई चुर्ण व प्रमाण से जल डाला जाता है। उपर मटकी को पारो (झकणी) से झांक कर लाल कपड़े से बांधा जाता है। उसे कुंकू, हल्दी, चावल के पांच टीके लगाकर पांव पड़ते है और तेज आगी वाले चुल्हे पर चढ़ा देते है। कुछ समय की उबाली से काढ़ा बन जाता है। अच्छा काढ़ा बनने पर उसमें महुये की राब (मीठी जेली) छोड़ते है और आगी को चुल्हे के बाहर कर देते है। काढ़ा ठन्ड़ा होने पर उसे साफ बर्तन या बाटली मेंजमा कर देते है। कुछ महिलायें तिल्ली कुटकर गुड़ मिलाकर तिल्ली के लड्डू बनाती है और प्रसुति (बारतिनबाई) महिला को दोनो समय पांच दिनों तक काढ़ा और तिल्ली के गरम लड्डू दिये जाते है ताकि शरीर में ताकत आयें। सुतक काल में परिवार जनों को पूजा-पाठ वर्जित रहती है।

पोवार समाज में छटी का दस्तुर

नवजात शिशु का नार झड़ने के बाद, खासकर छटवे दिन फाटकपर रखी टेंभरून की लकड़ी जला दी जाती है बाद में सम्पूर्ण घर की साफ-सफाई, सड़ा-सारवण तथा बिस्तरों के चादर, खोर आदि बदले जाते है। माता और बच्चें

को नहला धुलाकर, कमरे की साफ- सफाई की जाती है। चौके की साफ- सफाई, सड़ा सारवन कर चुल्हों को पोता जाता है। पुराने मिट्टी के पकाने के बर्तन तोड़ कर नये बर्तनों में भोजन बनता है। देवघर में चवरी की पूजा व दीप प्रज्वलन किया जाता है। तुलसी वृंदावन को जल चढाया जाता है। बालक को माता की गोदी में बिठाया जाता है। अन्य महिलायें दीया प्रज्वलित कर आरती लेकर आती है।

दीया को कपडे से झांककर रखा जाता हैं ताकि जावर पुरी तरह उतारते तक शिशु की दीये पर नजर न पड़े। नाई शिशु के सिर के बाल निकालता है (जावर) और उन बालों को बुआ या बहने अपने पल्लु में जमा करती है। बाल झेलनेवाली महिलाओं को नये वस्त्र व दान-दक्षिणा से पुरस्कृत किया जाता है। दादी/बुआ या ननंदे शिशु यदि बालक है तो करदोरा (कमरदोरा) बांधती है या यदि बालिका है तो उसके पांव कुकू से रेखांकित करती है। इस दिन बुआ, बहने, ससुराल के रिस्तेदार व अपने कुलीन लोगों को आमंत्रित किया जाता है। वे एक एक कर शिशु को टीका लगाकर उपहार भेंट करते हैं। भोजन दिया जाता है। किन्तु मामा के लिये यह समारोह वर्जित होता हैं। इस दिन के बाद परिवार जन बाहरी व्यावसायिक कार्य करना प्रारम्भ करते हैं।

बारसा समारोह

बालक के सवा महिने की आयु का होने पर बारसा समारोह आयोजित किया जाता है झुला सजा-धजा कर नरम आसन पर बालक को सुलाया जाता है। एक हाथ से झुले को हिलाया जाता है और दुसरे से मीठी गेहूं की मिसर (घुगरी) छोड़ी जाती है, जिन्हे बच्चें बड़े चाँव से चुन-चुन कर खाते हैं। बाद में बालक का नामकरण विधि सम्पन्न होता है। बच्चे को मेहमान नये-नये कपड़े और खिलौनों का उपहार देते है। बच्चें की माँ नये वस्त्र परिधान कर सामने के आंगन में आकर खड़ी होती हैं।

घर की बुजुर्ग महिला उस के सिर पर जल से भरा लोटा रखती है। महिलायें उसके माथे पर टीका लगाकर पांव पड़ती है। उसे पान के बीड़े खिलाये जाते है और कंधे पर हसियाँ रखती है। बाद में माता लोटे के पानी से आंगन सिंचती है,

हसियाँ से मिट्टी खोदती है। यह रस्म जचकी के बाद वर्जित गृह कार्य जैसे पानी भरना, खेतों में काम करना आदि आज से प्रारम्भ करने की ओर संकेत करती हैं। बाद में पलाश के १२ पत्ते पानी से साफ धोकर उन में ताजा पकाया रवाना-पकवान - खीर नैवेद्य के रूप में परोसा जाता है।

एक परोसा मिट्टी खोदे हुये स्थल पर रखा जाता है जो संकेत करता है कि माता अब नियमित रूप से खाना बना सकती है बाकी 99 परोसे दाई अपने पल्लों में झाँककर ले जाती है। इस अवसर पर दायी को नई साड़ी - चोली पहनाई जाती है। ग्रामिणों को भोजन कराया जाता है।

शिशु खीर चटाई कार्यक्रम

प्रथम दीपावली के अवसर पर लक्ष्मीपूजन के दिन लक्ष्मीदेवी पूजन समाप्ति पश्चात माता द्वारा नवशिशु को अपनी गोद में पकड़कर चावल की खीर देवघर में या आंगन में बृंदावन के सामने चटाने की प्रथा है। बालक बालिका को नये वस्त्र पहनाये जाते हैं।

दाढ़ी निकालने की प्रथा

लड़के की दाढ़ी फुटते ही युवा या किशोर अवस्था में पहुंचा समझा जाता है। प्रथम दाढ़ी निकालने हेतु समारोह आयोजन की पोवारों में प्रथा चली आ रही है। बहने, बुआ, भाभियाँ आदि महिलायें लड़के को हल्दी लगाती है। उसे नये वस्त्रों का अहेर किया जाता है। युवक चौक पर आसन ग्रहन करता है और नाई उसकी दाढ़ी उतारता है। बुआ या बहने बालों को अपने पल्लु में झेलती है। बाद में नाई युवक को नहलाता है। पहनने हेतु नया पोशाक उसे बुआ या बहन भेंट करती हैं। फिर युवक पाट के पांव पड़ कर आसन ग्रहन करता है। उसे माथे पर तिलक-कुमकूम लगाकर, पांव पड़कर बुआ या बहन उसके ओंजुर में पान, नारियल और सुपारी रखती हैं। महिलाएं पैसे देकर पांव पड़ती हैं । इसके बाद चने की दाल, गेहूं की घुघरी और शक्कर मिलाकरउसकी प्रसाद सभी उपस्थित जनसमुदाय को वितरित की जाती है । इस अवसर पर बाल झेलने वाली महिलाओं को वस्त्रों का उपहार और मेहमान, घरजन आदि को भोजन कराया जाता है।

पोवार (३६ कुल पंवार) समाज के सामाजिक सांस्कृतिक रीति-रिवाज

गुरू दीक्षा

पोवारों में यह परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। इलाहाबाद या काशी से पंडित आने पर नवयुवकों को विधिवत दीक्षा दी जात हैं। पंडित न आनेपर यह विधि स्थानीय ब्राह्मण, गोसाई, बैरागी या भगत के द्वारा सम्पन्न कराई जाती है। शुभ तिथि देखकर यह कार्यक्रम किया जाता है। घर की साफ सफाई, सड़ा-सारवन कर घर में एक स्थान पर चौक डालकर पीढ़ा या पाट रखा जाता है| युवक/युवती नहा-धोकर आसन ग्रहन करते हैं। प्रथम गुरु के चरण स्पर्श कर उसके सिर पर कोरी धोती या दुपट्टा रखा जाता है, उन्हे तिलक लगाकर पांव पड़े जाते हैं। गुरु प्रथम युवक/ युवती पर जल छिड़ककर पवित्रीकरण, जल चेले/चेली के हथेली में भरकरपीने का निर्देश कर आचमन तथा शिखा (चोटि) को जल से गीला कर कच्ची गांठ बांधने कहता है और मंत्रोपचार करता है। इसे शिखा वंदन कहते है।

इस समय तीन मंत्र उच्चारित किये जाते हैं -

अ) पवित्रीकरण - ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

ब) आचमन - ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

स) शिवा वंदन - ओम् चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिरवा मध्ये तेजोवृद्धि कुरुष्व मे।

बाद में गुरु अपने शिष्य के कान में एक मंत्र फुकता है -"धीमहि धि" या "ओम् भूर्भुवःस्वः तस्यवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात या ओम् नमो शिवायः या ओम् नमो वासुदेवाय आदि।" अंत में गुरू शिष्यों से कोई भी एक मनपंसद वस्तू या आदत त्याग करने का वचन लेता है।

****

पोवार (३६ कुल पंवार) समाज के सामाजिक सांस्कृतिक रीति-रिवाज

विवाह संस्कार

पोवार परिवारों में विवाह संस्कार बड़ी धूमधाम से मनाये जाते है। प्राचीन काल में शादियाँ सप्ताह भर चलती थी अब दो या एक दिन में ही सम्पन्न की जाती हैं। पोवारों में दहेज या हुंडा प्रथा नही हैं। विवाह संस्कार में ब्राह्मण आवश्यक नहीं होता। लगुन "राम नवरदेव- सीता नवरी सावधान" के साथ पुराने जमाने में लगाई जाती थी। अब ५ या ७ मंगलाष्टक बोले जाते हैं। लगुन के बाद, सप्तपदी(भँवर) “धीमहिधिः” कह कर सम्पन्न होती है। शादी में केवल मंगलसूत्र प्रमुख्यतया आवश्यकगहना होता है। अन्य गहने ऐच्छिक उपहार हुआ करते हैं। शादी में वधू का पिता खान-पान के बर्तन, गाय-भैस, सोना-चांदी अपनी इच्छा से स्त्रीधन रूप में देता है। विवाह सम्बधित करीबन २५-३० नेंग दस्तुर होते है। पोवार महिलाओं में विवाह समारोह का श्रीगणेशाय होते ही मेहंदी लगाना मुख्य आकर्षण होता हैं। पोवारों में शादी समारोह की तिथि निर्धारित होने के पश्चात ब्याह की रश्में प्रारम्भ हो जाती है।

काज (कुलदेव) पूजा –

पोवार समाज में विवाह पूर्व दोनो पक्ष अपने अपने कुल देवताओं की पूजा करते है। परिवार के ज्येष्ठ सदस्य के घर जाकर या अपने घर के देवघर में कुलदेव की पूजा की जाती है। कुलदेवता दुल्हादेव (शिव) नारायण देव (विष्णू) तथा सांकलदेव (पंवार आद्य पुरुष) देवघर में पोतली में रखे रहते हैं, उन्हें विधिवत उतारा जाता है, पूजा की जाती है एवम्स्व कुल जनों को भोजन कराकर फिर इन देवताओं को पोतली में वापस विश्राम दिया जाता है। कुछ लोगों के अनुसार इस अवसर पर दूल्हा देव के नैवेद्य हेतु पशु-बली (काला बकरा) की थी और इस मौके पर स्वकुलीन लोग घर के अंदर भोजन कर हड्डीयां एवं उर्वरित अन्न घर में ही एक गड्ढा बनाकर उसमें डालते थे । हाथ भी वहीं धोते थे और अंत में उस गड्ढे को मिट्टी भरकर बंद कर दिया जाता था। इसे 'बधई' कहते है। चूँकि पोवार समाज को प्राचीन ब्रह्मक्षत्रिय माना जाता है इसीलिए बली प्रथा को बहुसंक्ष्यक समाज सही नहीं मानता है इसीलिए यह प्रथा अब धीरे- धीरे विलोपित चुकी है। सभी पोवार अठई-सुकुड़े का नैवेद्य चढ़ाते हैं।

सगाई/पायलगनी या फलदान

पहले भावी वधू के पैर पड़े जाते है। वर पक्ष के लोग अपने रिस्तेदार सम्बन्धित मित्रों, गांव के प्रतिष्ठित लोगों की बारात वधु पक्ष के घर ले जाते है। उसे पुराने जमाने में **'गुरो की बारात'** कहते है तथा सगाई को **'गुरी सुवारी को जेवन' या 'गुड़भात्या'** कहते हैं। पोवारी रीति-रिवाजों के अनुसार मेहमानों के पांव धोकर उन्हे चांवल - कुंमकूम का टीका लगाया जाता है। पहले के जमाने में गुड़-पोहा (भेली-पोहा) बाद में गिला आलु -पोहा-हलवा और आजकल क्षमता के अनुसार विविध व्यंजनों का नास्ता कराया जाता है। नास्ते के बाद पूर्व मुवी दिशा में आटे का चौक डालकर उस पर पाट रखा जाता है। उस पर कन्या आसन ग्रहन करती है और वर पिता, दादा या ज्येष्ठ भ्राता द्वारा कन्या को टीका लगाकर साड़ी आदि वस्त्र दिये जाते है। कन्या पोशाक परिधान कर आसन ग्रहन करती है। फिर वर पक्ष का बुजुर्ग या पिता कन्या के हाथों में पान, नारियल, ५ प्रकार के फल, गहने, श्रृंगार, कपड़े, मिठाई देकर बायें हाथ की उंगली (अनामिका) में अंगुठी (मुंदी) पहनाई जाती है। पश्चात पहले सव्वा रुपया या पांच रुपये तथा कुंकू से कन्या को टीका लगाकर चांवल/अक्षता से पांव पड़ने की प्रथा थी। अब ड्राय-फ्रुट, सुटकेस और बड़ी कॅश से पांव पड़ने की प्रथा बन गई है। सभी बाराती कन्या को टीका, द्रव्यदान कर पांव पड़ते है। इसे ही **पायलगनी या फलदान** कहते है। इस अवसर पर वधू पक्ष का दामाद वर पक्ष से सभी सामग्री ग्रहन करता है।

आंजुर भरने के बाद बहनों द्वारा आगदा (ओट-अंजुरी में पान - पैसा रखकर पूजा करना) भरा जाता है जिस में पहले कलश और बाद में वधू के आगदे भरे जाते हैं। इस में चावल के दाने पांच बार कन्या के पैर से सिर की ओर से ले जाकर सिर पर छोड़े जाते है। फिर आगदा वाली बाई पानदान से एक पान का बीड़ा और रूमाल उठाती है। नाई द्वारा दुल्हन के कुमकुम से पांव लिखे जाते है। बाद में भोजन (रोटी) कार्यक्रम संपन्न होता है। इसी तरह 'वर' की भी सगाई सम्पन्न की जाती है। पोवारों के इस कार्यक्रम में मातृपक्ष का बहुत महत्व रहता है तथा पुरोहित या मंत्र-पूजा पाठ या कोई वैदिक विधि बंधनकारक नही होती।

मंडपाच्छादन एवम् मातृका पूजन

मंडपाच्छादन एवम् मातृका पूजन पोवारों में १२ डेरी के विवाह मंडप की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। आठ डेरियॉ आठ दिशाओं-का प्रतिनिधित्व करती है। इनमें अष्ट देवता निवास करते है। अन्य तीन डेरियों पर ब्रह्मा विष्णू महेश का निवास होता है तथा अंतिम (१२वी) डेरी पर कुलदेवता निवास करते है, जिसे लगूनडेर मानकर पूजा की जाती है। लगूनडेर मोहई एवं अन्य ग्यारा सालई की, ४ लटके (बल्लियाँ) एवम् २४ हरे बांस तथा मंडप आच्छादन हेतू जामुन की डगाले (फांदिया) लाई जाती है। इस मौके पर बुआ कुम्हारिन की भूमिका अपनाती है। वह अपने पास ढकनों में जीरा और धनिया भरकर धागे से बांध देती है उन पर पारे रखे जाते है। सम्मुख बैठी हुई महिलाएँ बुआ से ढकने खरीदती है। उन्हे डेरी पूजन पूर्व डेरी के पास रखा जाता है। डेरी पूजन हेतू महिलाएँ दुल्हा / दुल्हन को मंडप ले जाती है। नया ब्लाऊज या आंगी (चोली) या कोरा कपडा नागर के फार को लपेटा जाता है। उसे हाथ से स्पर्श कर दुल्हा / दुल्हन तथा परिवारजन एक के बाद एक पुरखों का नाम लेकर स्मरण करते है और उन्हें इस मांगलिक कार्य में उपस्थित होने आमंत्रित करते है। डेरियों को नैवेद्य चढाया जाता है। हल्दी कुमकुम का टीका लगाया जाता है, व्यंजन चढ़ाये जाते है, और पांव पड़े जाते है।

मंडप सुताई

मंडप सुताई कार्यक्रम हेतू मंडप में सड़ा-सारवन, रंगोली आदि होने के बाद दामाद भांजे के साथ कच्चे धागे से मंडप पांच से ग्यारह फेरे की सूताई करते है। इस मौके पर कोतवाल आमपत्रों की तोरण मंडप के चौफेर बांधता है। इस तरह **मंडप सुताई** का कार्यक्रम सम्पन्न होता है।

खनमाती दस्तुर

खनमाती दस्तुर के लिए महिलाएं नजदिक पास की जमीन की मिट्टी (धरती माय) खोदती है और **यह खन माती** नई टोकनी में डालकर सिरपर कोरा कपड़ा लेकर रखती है एवम् घर वापस आती है। मंडप में मिट्टी को गीला कर लगून डेर के आसपास लिपा जाता है। लकड़ी के छोटे से पाट पर एक बेठ

बनाई जाती है। कहीं कहीं चुल्हा भी साथ में बनाने की प्रथा है। बाद में इस पाट को बेठ के साथ देवघर ले जाया जाता है।

नांदड प्रज्वलन

जो विवाहित परिवारजन उपवास रखता है वह अपने सिर शिरवा से पांव के अंगुठे तक धागे के पांच सरे लेता है,उसे कपास की कांडी पर लपेटता है, फिर नांदड (मिट्टी का बर्तन) देवघर में लाकर उसे तेल से पूरा भर दिया जाता है। धागे की लट डुबो दी जाती है और एक सिरा बाहर रख उसे प्रज्वलित किया जाता है। इस नांदड के दोनों बाजू में सात-सात मिट्टी के दिये प्रज्वलित किये जाते हैं। नजदिक ही दामादों या भाँजों के द्वारा प्राप्त बड़ के पत्तों के ७ या १४ जोडी द्रोण रखकर उनमें सोजी रखी जाती है और देवघर मे चौरी (पुरखों) की पूजा की जाती है। यह महाकाली का दीप विवाह समारंभ संपन्न होते तक प्रज्वलित रखा जाता है।

माहे दसाई

माहे दसाई हेतू परिवार की एक दम्पत्ति जोड़-गाठ बांधकर पाट-बेठ टोकना में रखते है एवम् पड्डा से झाँक देते है। पुरुष उसे अपने सिर पर रखकर तथा पत्नी केटली से अखंड जल धारा छोड़ते हुये दोनों मंडप की ओर आगे बढ़ते है। पाट - बेठ को लगन डेरी के पास प्रस्थापित किया जाता है। इन्हें श्रीगणेश गौरी का प्रतिरूप माना गया है।

काकन बंधाई

काकन बंधाई का दस्तुर महत्वपूर्ण होता है, दुल्हे / दुल्हन को बीच में बिठाकर पांच-सात महिलाएं बाहर से घेरा बनाती है एवम् एक दुसरे से अपने सिर टिकाती है उनके सिर के बाहर से धागे के पांच घेरे लिए जाते है। बुआ अपनी हथेली से धान पीसकर चांवल निचोड़ती है और चांवल के पांच दाने धनिया जीरा पांच (खाने के) पानों के ऊपर रखती है। पानों को चारो तरफ से मोडकर पांच सरी धागे में तांबे की अंगुठी डालकर उन्हें दो बार घेरा मारकर दो गाठें बांध देती है। इस तरह काकन बनकर तैयार हो जाता है। बुआ वर/वधू का

दाहिना हाथ लेकर मजबूती से पांच या नौ गाठे लगाकर मनगट पर काकन बांध देती है। काकन बांधने के बाद वर/वधूने घर के बाहर जाना या खाट/ पलंग पर बैठना वर्जित होता है।

बिजोरा (वर/वधू चढ़ावा)

प्रथम वर पक्ष की ओर से वधू पक्ष के घर बाजे गाजे से सगे-सम्बन्धि के साथ बारात ले जाते है। लडकी का पिता या ज्येष्ठ सदस्य सभी बारातियों के पांव पीतल के कटोरे में धोकर अंगोछे से पोंछता है। कुमकुम चांवल से टीका लगाकर आदरपूर्वक राम-रमाई लेता है। वधू को कुल तीन चढाव चढाये जाते हैं।

पहला चढाव - मंडप में चौक पर पीढ़े पर वधू को बिठाल कर वर का पिता या बुजुर्ग हाथ में पहनने साड़ी तथा ब्लाऊज सौंपा जाता है।

दुसरा चढाव - वधू द्वारा नये वस्त्र परिधान करने के बाद कार्यक्रम देवघर में होता है । इस वक्त जेवर, आभूषण चढ़ाये जाते हैं।

तीसरा चढाव - सामने की छप्पर पर या मंडप में चार सुमी चारपाई (खटिया) पर सम्पन्न होता है। खटिया के चार पांव पर चार बाराती बैठते है और बीच में वर का बड़ा भाई बैठता है। ऊपर से शालू का छत ताना जाता है। वर का बड़ा भाई दुल्हन को गोद में बिठाता है और वर के पिता या ज्येष्ठ समकुलीन व्यक्ति द्वारा तीन या अधिक साड़िया (शालु, तीरगोनी आदि) ब्लाऊज, संलग्न पोशाक, स्वर्णाभूषण, श्रृंगारपेटी, सुटकेस, पादत्राण आदि सामग्री भेट की जाती है। जिसे वधू पक्ष का दामाद वधू के पीछे खड़ा रहकर ग्रहन करता हैं। एक साड़ी दीपावली के अवसर पर पहनने के लिए भी दी जाती है, इसे **चरळ की साड़ी** कहते है। फिर बिजोरा का मान-पान का भोजन (सिमंत भोजन) सम्पन्न कराया जाता है।

डेरपूंजी का कार्यक्रम: बाद में **डेरपूंजी का कार्यक्रम** होता है। बाराती मंडप में आते है। महिलाओं द्वारा आरती मंडप में लाई जाती है। लगुन डेर को कोरे कपडे में ९ हल्दी, ९ सुपारी और ९ पैसे, ९ खाने बनाकर अलग अलग ९ स्थानों

पर रखते है। दोनों पक्षों के सम्बन्धी (बिह्याई) पाटों पर आमने सामने बैठते है। देवी-देवताओं का, खासकर गणेश तथा गौरी का स्मरण कर अन्य देवताओं के भी नाम पुकारते है। प्रत्येक भगवान के नाम के बाद एक पान का बीड़ा एक दुसरे को खिलाते है। इस श्रृंखला में यदि सभी देवताओं का स्मरण करें तो ३६० पान बीड़े लग सकते है। इसे **पान जिताई / पान खिचाई** कहा जाता है। इस वक्त खुब मजा आता है। बाद में कपड़े में रखी सामग्री को ९ खानों की दो गांठे बनाते है, एक में पांच और दुसरी में चार खाने की गांठे होती है। इन गाठों को दोनों पक्ष के मामाओं को सौंपा जाता है जिनका काम लग्न घटिका पर आता है। इन्हे **लगुन गांठे** कहते है।

डेर पूंजी : पांच बाराती एवं वधू लगुन डेर के कुमकुम, हल्दी, चांवल से पांव पडते है और उसे गड्ढे में डालकर मिट्टी से गड्ढा भरा जाता है। इसे **डेर पूंजी** कहते है। फिर पांच बाराती जानोसा स्थल जाते है। जानोसा घरमालक को चांवल, हल्दी, सुपारी आदि देते है ताकि वह गणेश (गनोबा) की पूजा करे व परिसर मंगलमय बनें।

इसी तरह वधू पक्ष के लोग वर पक्ष के घर **बिजोरे की बारात** ले जाते है। पहले बारातियों का पांव धोना, नास्ता पानी होता है और चढाव की रस्म अदा की जाती है। दुल्हे को केवल दो चढाव चढाये जाते है। पहला चढाव मंडप में चौक-पाट पर बिठा कर टीका लगाते है और पहनने के लिए पोशाक भेट की जाती है। दुसरा चढाव घर में होता है जिसमें पगडी, साफा, कोट/शेरवानी, अन्य कपडे, श्रृंगार सामग्री, पेटी या सुटकेस में भरकर भेट की जाती है। साथ में सोने की अंगुठी, घड़ी, चेन आदि चढाई जाती है। एक जोडी पादत्राण, मोजा भी दिया जाता है। सभी बाराती दुल्हे को तिलक लगाकर पांव पडते है। पांच बाराती व दुल्हा, सुवासिनी डेर पूंजी का कार्यक्रम करते है। बाद में भोजन **(बिजोरा जेवन)** का आयोजन किया जाता है ।

हल्दी-अहेर - महिलाएं बाजे-गाजे के साथ मिट्टी के कटोरे में हल्दी का गीला लेपन लेकर घर से निकलती है। साथ में भांजे, दामाद भी होते है। सर्वप्रथम हल्दी मातामाय / देवी गौरी को चढाई जाती है। बाद में मारुती (हनुमान) एवम् अन्य देवताओं को नारियल फोडकर विधिवत पूजा की जाती है। हर देवता को

नया वस्त्र अहेर किया जाता है। पाट के पांव पड़कर दुल्हा / दुल्हन को मंडप में बिठाया जाता है, उसे खासकर उत्तरमुखी और पितृकुल के पुरुष महिलाएं पूर्वमुखी बैठती है। पांच महिलाएं दुल्हा/दुल्हन को हल्दी लगाती है, बाद में महिला – रिस्तेदार सभी को हल्दी लगाती है। टीका लगाती है। हल्दी तिलक माथेपर लगाकर उपस्थित वर/वधू पक्ष को अहेर किया जाता है। सर्वप्रथम वर/वधू की मामी, बुआ, मौसी, समदन आदि अहेर करती है। फिर अन्य महिलाएं अहेर करती है।दुल्हा-दुल्हन को कार्यक्रम समाप्ति बाद मंडप में नहलाया जाता है। अंत में ह**ल्दी अहेर का भोजन** दिया जाता है।

लगुनबारात / दुल्हासार

पुराने जमाने में **दुल्हा की सवारी** के लिए खाचर व बैल खुब सजाये जाते थे, उसे '**गुडुर**' कहा जाता था। दुल्हे की माँ दुल्हे को सजा-धजा कर उंगली पकड़कर मंडप ले आती है। दुल्हा पाट के चांवल से पांव पड़कर उस पर खड़ा होता है, उसकी मां द्वारा आरती उतारी जाती है इसे '**पछाड़ना**' कहते है। इस विधि को आगे बढ़ाते हुये नांदड, रई (दही घुसरने की), मुसल, सूपा आदि एक-एक कर नये वस्त्रों में लपेटकर दुल्हे के पैसे से सिर तक दायें - बायें पांच स्थानों पर स्पर्श कर सिर के उपर से घुमाये जाते है। इस के बाद दुल्हे के पांव पड़ते हैं। दुल्हे को चंदोडे की ओळ (छत) के नीचे, बीच में तुतारी से उठाकर चार लोग मंडप से फाटक से बाहर निकालते है। बाल विवाह में जीजा या मामा दुल्हे को कंधा या कमर पर बिठालकर बाजे-गाजे के साथ निकलते थे। इस वक्त दुल्हे को मारूती मंदिर ले जाकर पूजा कराई जाती है। एक या पांच नारियल फोड़े जाते है। दुल्हा चारो दिशाओं में चांवल वर्षाव कर देवताओं की प्रार्थना करता है और वाहन (गुडुर) में बैठता है । दुल्हे को माँ दूध पिलाती है और बतासे या गुड़ खिलाती है। इस वक्त बुआ, बहने, भाभी, माँ, चाची, आदि वाहन पर आरती रखती है। टीका लगाकर गुड़ खिलाती है। आरती में दुल्हे से ईनाम वसुल करती है और बारात बाजे-गाजे के साथ सार की जाती है। इस रस्म को **दुल्हा सार** कहा जाता है । पहले दुल्हे के साथ ३,४ महिलाएं (सुवासिनी/ करोलिनी) दुल्हा की सहायक के रूप में बारात में भेजी जाती थी क्योकि दुल्हा बालक अवस्था में हुआ करता था। आजकल शादी लगाने के उद्देश्य से भारी संख्या में महिलाएं बारात में सम्मिलित होती है, दुल्हे की माँ

बरात में शामिल नहीं होती। बारात के साथ कावड़ ले जाई जाती है। कावड़ में नमक, चांवल, धोत, धोती तथा सुम (घास) भर कर वधू पक्ष द्वारा दिये जनवासा (विश्रामगृह) ले जाई जाती है। सुम से रस्सी बुनी जाती है। कावड़ से वापसी में दहेज (आंदन) में मिली भेट वस्तुयें वधू से वर पक्ष के घर ले जाई जाती हैं । खासकर गुंड, गंज, थाली, कटोरे, लोटा, गिलास ले जाते है।

बारात अगवानी : बारात वधुपक्ष के गांव की सीमा पार करते ही कोतवाल वधू पक्ष को इसकी सूचना देता है। वधू पक्ष से दामाद लोग बारातियों से मिलने गांव सीमा पर पंहुचते है। इसे **बारात झेलना** कहते है। पानी एवं पान-सुपारी से बारातियों का स्वागत किया जाता है। वे बारात को मारूती मंदिर या आखर की ओर बढ़ने की प्रार्थना करते हैं । **दुल्हा उतारना** : बारात मारूती मंदिर पहुंचते ही दुल्हन पक्ष की महिलाएं तथा पुरुष बाजे गाजे के साथ आरती, पानी, शरबत लेकर घर से बारात की ओर चल पड़ते हैं। समधी (बिह्याई) भेट होती है। गुलाल, शालु, तिलक से स्वागत होता है। राम-रमाई होती है। इसे **समधी भेट** कहते है। महिलाएं आरती दुल्हे की गाड़ी सम्मुख रखती है । वर पक्ष से इनाम पाकर वहां से हटती है। फिर दुल्हे को नीचे उतारा जाता है, करोलिन भी उतरती है। उन्हें पानी व शरबत पिलाई जाती है। दुल्हा मारूती मंदिर जाकर पूजा करता है। चारो दिशाओं में चांवलअर्पण कर देवी-देवता की वंदना करता है। फिर घोडे, कार पर या पैदल आगे बढता है। जब पैदल चलता है तो उपर चंदोड़ा की छत दुल्हे के सिर पर चार लोग पकड़े रहते है और एक बीच में तुतारी से उसे उठाये रहता है। बाजा, आतिशबाजी, रोशनाई, नाच-गाने हर्षोउल्हास की समा बांधते है।

मंडप प्रवेश (मंडा मारना) - घोड़े या अन्य वाहन से उतरकर वधू- पिता निवास या मंगल भवन सम्मुख दुल्हा नीचे उतारा जाता है। महिलाएं आरती उतारती है। इत्र पुष्प आदि बरसाये जाते है। दुल्हा प्रवेश द्वार पर खड़ी महिलाओं के गुंड के पानी में हाथ डुबोकर उसे झलकाता है और कुछ चिल्लर राशि छोड़ता है। उस पर चार बराती छत लिये होते है और जैसे ही दुल्हा मंडप समीप पहुचता है वह मंडप के शगून बास को हाथ से स्पर्श करता है। मंडप पर से जीजा (दुल्हन का) दुल्हे के उपर की छत पर रंग के कुछ छिटें छोड़ता

है। फिर दुल्हा सुवासिन तथा मेहमानों के साथ जनवासा वापस जाता है। इसे **मांडो मारना** कहते है।

जनवासा - नवरदेव तथा मेहमानों के अल्प विश्राम के लिए जनवासे की व्यवस्था होती है। आजकल बारात सीधे जनवासा ले जाते है और बाद में लगीन मंडप में । यहाँ सभी का नहाना, धोना, नास्ता-पानी होता है। वधू पक्ष से कुछ महिलाए उपहार के रूप में खीर ले आती है उसे **'बनवत'** कहते है। तेल-गौडा, नोन-गोडा की बाराते शुरू होती है, नमक, चांवल आदि सभी जनवासे से भेजा जाता है। फिर लगुन नथ, ब्लाऊज, पोत, बासिंग आदि सामग्री भेजी जाती है। दुल्हन पक्ष की ओर से भी पांच बाराती जनवासा आकर पाँव धोते है, टीका लगाते है और चढावा स्वीकार करते हैं। लगुन के लिए प्रस्थान - दुल्हन पक्ष के वस्त्र, आभूषणों से सज- धज बाजे नाच-गाने, आतिशबाजी के साथ प्रस्थान करता है । पोवारों में लगुन अक्सर गोधुली बेला पर होती है।

पाणिग्रहण विधि - जो दो लगुन गाँठे वधू के बिजोरा से दोनों पक्ष के मामा लाते है उसे एक दुसरे को फेर दिया जाता है। पुराने जमाने में दुल्हा-दुल्हन को दो बाँस के टोकनों में देवघर में दुल्हादेव एवम् चौरी दीपक के सामने बैठाया जाता था। बीच में एक अंतरपाट (कोरी धोती) जो कावड के साथ आती है उसे दोनों पक्ष के मामा पकड़ते थे। सूरज डुबते ही घर के उपर आड़े पर चढ़ा हुआ आदमी (भगत) थाली बजाता था। देवघर के अंदर 'धिम हि धिः' कहकर पुष्प बरसाये जाते थे। दुल्हा दुल्हन के शालू को गांठ बांधकर फिर मंडप लाया जाता था और उपस्थित समुदाय उनपर अक्षता वर्षाव कर विवाह लगाते थे। हिंदू विवाह संस्कार में कुलदेवी-देवताओं को साक्षी मानकर चांवल, ज्वारी को हल्दी लेपन कर विवाह अक्षता गणेश गौरी विवाह का अभिन्न अंग है। वैदिक विवाह प्रणालि में बिना अक्षता शादी का कोई महत्व नही होता । आजकल मंडप मंच पर दुल्हा-दुल्हन बैठते या खड़े रहते है। दोनों. पक्ष के मामा अंतर पाट पकडते है। पंडित या कोई भी उपस्थित या कॅसेट ५-७ श्लोक ध्वनी गूंजती है, "राम सीता लगन लागे सावधान' के जयघोष के साथ अक्षता का वर्षाव करते है। आजकल दुल्हा दुल्हन एक दुसरे को पुष्पमाला पहनाकर लगन बंधन (परिणय) की रस्म निभाई जाती है। बाजे बजते है, फटाके फुटते है, आतिशबाजी होती है और वर पक्ष के लोग मंडप में नाचते है।

पोवारों में गोधूली बेला पर लगन का बहुत महत्त्व है। सूर्यास्त के इर्दगिर्द लगन लगने से दुल्हा-दुल्हन का दाम्पत्य जीवन अटूट व मंगलमय माना गया है। यह योग कुंडली दोष का विच्छेद कर वर-वधू दोनों के लिए ज्योतिष्यमाला अनुसार अत्यंत शुभदायी माना गया है। लगुन के बाद नवरदेव-नवरी को दुल्हन की माँ या दादी/चाची/ माहाल्पी (ताई) पान बीड़ा खिलाती है। दोनों की शालु से गांठ बांधकर माँ दुल्हा दुल्हन को लेकर देवघर जाते है। वहां दुल्हा-दुल्हन को पहेलियां बुझाकर एक दुसरे का नाम बताना होता है।| हंसी-मजाक के बीच दुल्हन- दुल्हा एक दुसरे को लड्डू खिलाते है और नास्ता करते हैं।

भाँवर (सप्तपदी) - पुरानी परम्परा अनुसार पांच बाराती पारडे (पल्लो) में धोत रख कर, चंडोला की ओल के पीछे से दुल्हा-दुल्हन के सिर पर से सात फेरे लगाते थे और 'धिम हिः धिः'(सक्षिप्त गायत्री मंत्र) का जयघोष करते थे। आजकल पंडितजी से सप्तपदी विधि कराई जाती है। अग्नि कुंड में यज्ञ कर सात फेरे लेते है। दुल्हा दुल्हन एक दुसरे से वचन लेते है, पंडित इस पुरी विधि में मंत्रोपचार करते रहते हैं।

आंदन (दहेज) - पुराने जमाने में दुल्हा-दुल्हन को गुडूर की जुआडी लाकर मंडप में उस पर बिठाला जाता था। सुम की रस्सी धागे के साथ लेकर सात फेरे दुल्हा-दुल्हन के गर्दन के बाहर से लिये जाते थे। पांच सरी सुम रस्सी व धागे को बीच में कनिक के लड्डू से चिपकाया जाता था और इसे गोत-गुँथना कहते हैं। यह सूम के रस्सी व धागा की गोत दुल्हन का भाई दुल्हा-दुल्हन के गले में डालता है। वधू पक्ष जन भेट वस्तुएं रसोई के बर्तन, उपकरण, राशि, आदि नवदम्पत्ति को भेट करते हैं। दहेज के अंत में दुल्हन का भाई गोत छुड़ाता है। उसे गाय, भैस, अनाज आदि देने का वचन देना होता है।

पाव पवारना - दुल्हन के माँ-बाप दुल्हा-दुल्हन दोनों की सेलू से गांठ बांधकर उनके पांव दूध व दुभारी से धोते है। इस दस्तुर को पांव परवारना कहा जाता है । यह गौरी गणेश का अभिषेक और चरण पूजन की रस्म है जो वैदिक काल से चली आ रही है ।

बाल खेलना - दुल्ह- दुल्हन को पाट पर बिठाकर बाल (सेमी के दाने) खिलाये जाते है । इसे सारी - फासा या हार-जीत खेल भी कहा जाता है, इस खेल में पाँच बार दुल्हा अपने मुठ में बाल के दाने छूपाता है और ऐसा दुल्हन भी करती है। एक दुसरे को बताना होता है कि मुंठ में दाने सम संख्या में है या विषम संख्या। इसे **'उना का पुरा'** याने विसम या सम ऐसा कहकर बताया जाता है। यह खेल केवल दुल्हा-दुल्हन की जोड़ी ही नही तो वर तथा वधू पक्ष की दो- दो अन्य सम वयस्क जोड़ियां भी खेलती है। बाद में हँसी मजाक से दुल्हा-दुल्हन मिट्टी की करई के पानी से नहाते हैं।

कुसुम्बा : बारात प्रस्थान होने पूर्व पानी भरनेवाली महिलाएं, कहार नाई आदि आरती लेकर आते है। गुलाल, रंग, इत्र गुलाबजल से बारातियों का स्वागत व पानदान पेश कर इनाम मांगते है, जब दुल्हा मंडप मारता है तब दुल्हन के जीजा रंग छिडकते है उन्हे भी इनाम नवाजा जाता है।

दुल्हा-दुल्हन बारात बिदाई

इसे पोवारी में '**सपटनी'** कहते है। दुल्हा-दुल्हन बिदाई के लिए देवघर में तैयार होने पर नाई दोनों के पांवों को लाल रंग लगाता हैं। दुल्हे का जीजा या भांजा फनोली के फुल को रंग में डुबाकर चेहरे की सजावट करता है । फिर दुल्हा-दुल्हन मंडप पधारते है। सभी दुल्हन पक्ष के मेहमान अक्षता व राशि से दुल्हा-दुल्हन के पांव पड़ते है। इसके बाद नांदड को गंगार के पानी में रख कर दुल्हा-दुल्हन प्रदक्षिणा लेते **है और उसे बुझा दिया जाता है। बारात के साथ नमक व चांवल जो वर पक्ष** से कावड़ से आता है उसे सवाई गुना बढाकर दुल्हे के घर वापस भेजा जाता है। कन्यादान दुल्हन के पिता, चाचा या भाई उसी तरह दुल्हे का पिता, चाचा या भाई आमने सामने बिछायत पर (दरीपर) बैठते हैं। वर पक्ष की गोद में वधु तथा वधू पक्ष की गोद में वर बैठता है। दोनों समधी एक दुसरे को मिठाई या गुड़ खिलाते हैं। फिर वर की गोद (कोरा) में वर एवं वधू पक्ष की गोद में वधू बैठती है। इसे **कन्यादान या लडकी सौंपने की रस्म** कहा जाता है। नवदम्पत्ति का स्वागत बारात मारूती मंदिर समीप आकर रुकती है, वर के घर से महिला, पुरुष आरती लेकर अगवानी करने आते है। आरती गुडूर या वाहन सम्मुख रखी जाती है। इनाम मिलने के बाद पहले दुल्हन

फिर सवासिनी, दुल्हा, सवासिनी नीचे उतारे जाते है। उन्हे पानी, शरबत पिलाकर उनका स्वागत किया जाता है। हनुमान की पूजा कर दुल्हा-दुल्हन आगे, बाराती पिछे चलते है और बाजा-गाजे, नाच-गाने के साथ घर पहुंचते है। फाटक पर पानी के गुंड लेकर दो महिलाएं खड़ी रहती है। दुल्हा-दुल्हन पाच बार कुल्ला कर पैसे गुंड में डालते हैं। फिर मंडप दुल्हा-दुल्हन को पाट पर खड़ा कर उनके पांव धुलायें जाते है। दुल्हन को दुल्हे की माँ या दादी आदि अंगुठी या कोई गहना भेट करती है या राशि में देती हैं। दुल्हन थाली में कुंमकूम के लाल रंग में पांव डुबाती है और देवघर दोनो प्रस्थान करते हैं | देवघर जाकर चौरी (पुरखों) की पूजा करते है और कावड़ में वापस आये चांवल अक्षता के रूप में अर्पित करते हैं ।

राखड़ी बड़ी का दस्तुर

मंडप में दामाद लोग बिछायत का इन्तजाम करते हैं। उस पर केवल वर पक्ष के स्वकुल (कुटुम्ब) की महिलाएं पंक्ति से दुल्हा-दुल्हन के दोनो ओर बैठती है। दामाद सभी महिलाएं के ओंजल में दुल्हन द्वारा मायके से लाई हुई उड़द दाल की बनाई हुई बड़ी दी जाती है। उन्हे वापस लेते वक्त बदले में मूल्य राशि की मांग की जाती है। इच्छानुसार पैसे पाकर दामाद बड़ी वापस लेते है। संकली (चांदी या फुलों का हार या धागों की एक गाँठ) दुल्हे के गले में पहनाई जाती हैं।

ढेंड़ो : मंडप में चारपाई (चार सुमी खटिया) डालकर चंदोलो की ओल बिछाकर उस पर दुल्हा-दुल्हन को खड़ा किया जाता है। सभी उनके पांव पडते है। सर्वप्रथम दुल्हा दुल्हन दोनो पंगत में बैठे लोगों के पाव पडते है। दुल्हन अपने मायके से लाई बड़ी की साँग बनाती है और परोसती है और फिर भोजन शुरू होता है। यह पौराणिक पद्धति का स्वागत समारोह' ही हैं।

समदुरा की बारात : दुल्हन पक्ष से बारात वर पक्ष के घर लायी जाती है। इस में महिलाएं भी आती हैं। यह बारात दुल्हन को वापस लेने आती है। स्वागत, नास्ता, भोजन पश्चात दुल्हन के साथ बारात वापस होती है। चौमास, गौना आदि आजकल बिदाई पूर्व सम्पन्न होते हैं ।

दाह संस्कार

पोवारों में मृत देह पलंग/खटिया पर नही रखते। व्यक्ति के मृत्यु पश्चात उसे मांडी पर लेकर उसके मुंह में गंगाजल डाला जाता है और जमीन पर बिछौना पर सुलाया जाता है। रामायण पाठ की पुरानी परम्परा पवारों में पायी जाती हैं । मृत व्यक्ति को नहला-धुला कर नई पोशाक पहनाकर, वंदन कर प्रेतयात्रा निकाली जाती हैं। प्रेत को गोबरी, लकडी, घी, शक्कर व अलसी तेल से अग्नी दी जाती है।

अस्थियां (फूल) जमा की जाती है, दाह संस्कार (मुखाग्नि) करनेवाले पुत्र का नाई मुंडन करता है और उसके बालों को जल में राख के साथ बहा दिया जाता है। घाट पर पोहा-गुड़ का नास्ता करने की प्राचीन प्रथा हैं। अस्थियां घर लाकर पीपल / आम पेड पर पोटली में बांधकर रखते हैं या वृंदावन नजिक गड्ढा खोदकर एक छोटे मिट्टीके ढकने में रख ऊपर से मिट्टी से भर देते हैं। दस वे दिन अस्थियां बाहर निकाल कर पूजा व पांव पडाई होती है (दशक्रिया) और पिन्डदान हेतु तीर्थस्थल ले जाया जाता है।

तेरावे दिन गंगापूजन कर मृत्यु भोज (तेरवी रोटी) दिया जाता है। कुछ क्षेत्रों में तीसरे दिन ही यह कार्यक्रम निपटा दिया जाता हैं। अधिकांश पोवारों का पिन्डदान हेतु रामटेक और मंडला तीर्थस्थल प्रमुख है। पुराने जमाने में पोवारों में पहले दिन प्रेताग्नि देने के बाद मैली (अशुद्ध) तथा तेरावी न करते हुये तीसरे दिन ही शुद्धिकरन विधि कर चोरवी (शुद्ध) रोटी सम्पन्न कराने की प्रथा थी।

श्राद्ध

पोवार लोग पितृपक्ष (कुंवार) माह के पखवाडा या पितृमोक्ष अमावस्या पर मृतक की तिथि अनुसार श्राद्ध मनाते हैं। लड़का (परिवार मुखिया) कुशघास की दोरी की माला (जनेऊ) गले में एवम् दोनों हाथों की अंगुलियों में अंगुठियाँ धारन कर कुश घास धुले पानी से दामाद, भांजेव अन्य अतिथियों के पांव धोकर, उनके माथे पर चंदन और चांवल से टीका लगाता है। घर में पांच पत्रियां बिछाई जाती है, सभी प्रकार का थोडा थोडा भोजन परोसा जाता है जिसे श्राद्धकर्ता घर की छत पर फेंक देता है। उसकी पत्नी पानी फेंकती है और पिता

का नाम जोरों से पुकारा जाता हैं। आंगन में चौक भर कर एक द्रोण में भोजन रख, चंदन, कुंकू, चावल, पुष्प आदि से पांव पड़ते है और काग (काक स्पर्श) (कौआ) की खाने की राह देखी जाती है। उसके भोजन ग्रहन करते ही गोमाता एवं ब्राह्मण वृंद को भोजन दिया जाता है और बाद में मेहमानों के साथ भोजन सम्पन्न होता हैं।

****

सन्दर्भ : पंवारी ज्ञानदीप